परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा में अपने आप को दृढ़
किया

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

1 शमूएल 30:6

“और दाऊद बड़े संकट में पड़ा, क्योंकि लोग उसे पथराव करने की बातें कर रहे थे; क्योंकि सब लोग अपने पुत्रों और पुत्रियों
के कारण अत्यन्त दुखी थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर
यहोवा में अपने आप को दृढ़ किया।”
— 1 शमूएल 30:6

जीवन में ऐसे समय आते हैं जब आपके आस-पास के लोग आपसे अलग हो सकते हैं। और यदि लोग नहीं, तो परिस्थितियाँ और हालात आपके विरुद्ध इस प्रकार खड़े हो सकते हैं कि आप आगे बढ़ने की आशा ही छोड़ दें। जब आप दाएँ देखते हैं और बाएँ देखते हैं, तो कोई सहारा दिखाई नहीं देता—न लोग, न साधन।

ऐसा ही दाऊद के साथ हुआ। वही दाऊद जिसके विषय में पहले गाया जाता था, “शाऊल ने हजारों को मारा, और दाऊद ने दस हजारों को,” वही जो प्रिय और सम्मानित था—अब परिस्थितियाँ बदल चुकी थीं। लोग उसे पथराव करना चाहते थे। वे उसकी मृत्यु चाहते थे।

परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा में अपने आप को दृढ़
किया

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

उसे कोई ऐसा न दिखा जो उसका हाथ थामे, उसे उठाए या उसे सांत्वना दे। फिर भी वह बैठकर रोया नहीं और यह नहीं कहा, “हे प्रभु, मुझे कोई सहायक क्यों नहीं दिखता?” उसने यह भी नहीं कहा, “हे प्रभु, मैंने इन सब पर कितने उपकार किए, और आज वे मुझे पत्थरवाह करना चाहते हैं।”

यद्यपि दाऊद गहरे संकट में था, पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि उसने अपने परमेश्वर यहोवा में अपने आप को दृढ़ किया।

उसने अपनी शक्ति मनुष्यों में नहीं खोजी।

और परिणाम यह हुआ कि जब उसने शत्रु की सेना का पीछा किया, तो उसने उन्हें पकड़ लिया, पराजित किया, और सब बंदियों तथा लूटी हुई सारी संपत्ति को वापस ले आया। वह एक महान विजय थी।

परन्तु यह सब उसके भीतर स्वयं को दृढ़ करने से आरम्भ हुआ। यही दाऊद की सफलता का रहस्य था।

आज बहुत से लोग दूसरों से सांत्वना, प्रोत्साहन और स्वीकार्यता की प्रतीक्षा करते रहते हैं। निस्संदेह, ये बातें अच्छी हैं। परन्तु जब वे हट जाती हैं, तो उनकी दृष्टि भी वहीं समाप्त हो जाती है।

परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा में अपने आप को दृढ़
किया

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

किन्तु यदि हम अपने आप को प्रभु में दृढ़ करें, तो हम हर समय—यहाँ तक कि कठिन समय में भी—सफल होंगे।

हम पहले सफल नहीं होते और फिर प्रभु में दृढ़ होते हैं। हम पहले अपने आप को प्रभु में दृढ़ करते हैं—तब विजय आती है। यही आत्मिक सिद्धांत है।

रणनीतियों और योजनाओं से पहले, हमें अपने भीतर, अपनी आत्मा को तैयार करना चाहिए। हमें उस परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए जिसने हमें बुलाया है और जिसने प्रतिज्ञा की है कि वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा और न त्यागेगा। तब हम अपनी दृष्टि को पूरा करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

इस सिद्धांत पर चलें। अपनी अपेक्षाएँ मनुष्यों पर न रखें।

प्रभु आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp